International Journal of Applied Research 2016; 2(9): 403-404

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 403-404
www.allresearchjournal.com
Received: 28-07-2016
Accepted: 29-08-2016

Rachna Saxena
Asst. Professor, People's Institution of Media Studies, Bhopal, Madhya Pradesh, India

Correspondence
Rachna Saxena
Asst. Professor, People's Institution of Media Studies, Bhopal, Madhya Pradesh, India

भारतीय ग्रामीण परिवेश एवं जनमाध्यम

Rachna Saxena

आजादी के बाद से अब तक भारतीय परिवेश में इसके प्रत्येक क्षेत्र में अलग अलग स्वरूपों में बदलाव आया है। यह परिवर्तन राष्ट्रीय गतिविधि के साथ साथ वैश्वीकरण के प्रभावों से भी अछूता नहीं है। वर्तमान में भारत का व्यस्क जनमाध्यम अपनी सशक्त शक्ति के रूप में प्रजातंत्र के चतुर्थ स्तभं के आधार पर मजबूती से खड़ा है, और यह जनमाध्यम भारतीय समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है। बीसवी शताब्दी का अंतिम दशक भारत में संचार के क्षेत्र में क्रांति के रूप में अभ्युदय हुआ। यह संचार क्रांति केवल शहरों तक ही सीमित न होकर भारतीय ग्रामीण अंचलों तक फेल गयी है। आज इक्कीसवीं सदी में यह दुनियाँ के अध्यतन संचार तकनीकों से भरपूर है।

काट्ज और वेडल (Katz and Wedell) के अनुसार भजनसंचार तीसरी दुनिया के साथ विकास से जुड़ा है। विकास में जनजाति और क्षेत्रीय विकास, आर्थिक वृद्धि में उत्पादन, सामाजिक आधारों में बीमारियों को कम करना, शिक्षा के स्तर में वृद्धि करना, आय में वृद्धि, सांस्कृतिक क्षेत्र में सामान्य प्रतीक को बढ़ावा देना। ग्रामीण क्षेत्र और लोक संस्कृति में जनसंचार साधन से इन्ही का विकास करना है।

संचार के क्षेत्र में तेजी से हो रही इस क्रांति के फलस्वरूप भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी अमेरिका यात्रा में भमीडिया, प्रौद्योगिकी और संचार पर आयोजित दूसरे गोलमेज में मनोरंजन और मीडिया उद्योग के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों से चर्चा में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के माध्यम से लगभग 600 गांवों को जोड़ने तथा 500 भारतीय रेलवे स्टेशनों पर फ्री वाई फाई की सुविधा के भारतीय सरकार के लक्ष्य के बारे में बताया वहीं वर्तमान में तकनीकी की महत्ता पर बल दिया तथा भारत में हो रहे डिजिटल बदलावों के बारे बताया।

यदी भारतीय सामाजिक संरचना की बात की जाये तो यहां पर दो तरह के समुदाय है, ग्रामीण समुदाय और नगरीय समुदाय। भारत ग्रामीण प्रधान देश है। आज भी वर्तमान रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश की 70 प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। अतः यहां नगरीय समुदाय की तुलना में ग्रामीण समुदाय अधिक है। ग्रामीण समुदाय की अपनी पृथक विशेषता है जैसे एक नाम, भौगोलिक क्षेत्र, हम भावना और अन्तः क्रिया।

भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में नगरीय संस्कृति के तत्व प्रवेश कर रहे है। गांव का लोक समाज नगरीय लोगो के वस्त्र, रहन–सहन के ढंग, कला जीवन–दर्शन, फैशन, मनोरंजन के साधन आदि को अपना रहा है। रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि ने नगरीय प्रभाव को गांवों तक फैलाया है। यातायाता एवं संचार साधनों के प्रभाव के साथ–साथ शिक्षा के विकास ने भी ग्रामीण भारत में परिवर्तन की लहर ला दी है। पंचायती राज्य व्यवस्था ने इसे और बल दिया है। सामुदायिक विकास योजनाओं और सहकारिता आंदोलन के कारण ग्रामीण भारत की आर्थिक तस्वीर भी बदली है। ग्रामीण समुदाय के परिवर्तन में नगरीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया का प्रमुख स्थान है। ग्रामीण उत्पादन का लक्ष्य ग्रामीण आवश्यकताओं की पूर्ति न रहकर नगर की बढ़ती हुई जरूरतों की पूर्ति करना बन गया है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था व्यापक नगरीय औद्योगिक व्यवस्था की पूरक अंग बनती जा रही है। बदलाव की इन नवीन शक्तियों ने ग्रामीण जीवन–शैली, संबंधों की प्रकृति एवं संस्थागत व्यवहार को भी परिवर्तित किया है।

जन सेवार्थ प्रसारण के लिए दूरदर्शन वर्तमान में भारत की राष्ट्रीय प्रसारण सेवा विश्व के सबसे बड़े स्थलीय प्रसारण संगठनों में से एक है। आज दूरदर्शन का प्रमुख चैनल है डीडी 1। सामाजिक शिक्षा के लिए यह अपने आप में अभिनव प्रयोग विश्वभर में पहला प्रयास था। इस के अविष्कार ने प्रसारण के अनेक साधनों को पीछे छोड़ दिया है यह ''ऑडइओं विजुअल'' अर्थात श्रव्य और द्रश्य दोनों से सम्बन्धित है। इसके दृश्य प्रस्तुतीकरण के जादुई आकर्षण के कारण यह सभी जनसंचार माध्यमों में

सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। टेलीविजन को प्रारंभ में दूरदर्शन के नाम से भी जाना जाता था। जिसका अभिप्राय था घटना का दूर से ही दर्शन।

दुरदर्शन ने तीन स्तरों वाली बुनियादी सेवा चलाई है जो राष्ट्रीय, प्रादेशिक व स्थानीय स्तर पर कार्य करती है। राष्ट्रीय कार्यक्रम में उन घटनाओं, मुद्दों और समाचारों पर बल दिया जाता है जिसमें समूचे राष्ट्र की दिलचस्पीहोती है। इन कार्यक्रमों में समाचार सामयिक वार्ताएं, विज्ञान, सांस्कृतिक पत्रिकाएं, वृत्तचित्र, सीरियल, संगीत–नृत्य के कार्यक्रम, नाटक व फीचर फिल्म शामिल होते हैं। भारतीय दूरदर्शन का भौगोलिक दायरा विश्व के किसी भी दूरदर्श से अधिक है। यह जनपक्षीय होने के साथ–साथ सच्चाई के अधिक करीब है। दूरदर्श का प्रमुख चैनल डीडी 1 विभिन्न क्षमताओं के 1042 स्थल ट्रांसमीटरों के जाल के साथ 87 प्रशिक्षत से ज्यादा आबादी तक अपने प्रसारण पहुँचाता है। यह विश्व के करोड़ों किसानों को कृषि उत्पादन बढ़ाने की नवीनतम् खाजों एवं अनुसंधानों से परिचित कराने एवं आर्थिक उत्थान के लिए जो सूचनाएँ एवं समाचार आवश्यक है, उनके प्रस्तुतिकरण का प्रमुख साधन है।

इस अभ्युदय पर गौर करे तो भारतीय सामाजिक जीवन में जनमाध्यम के संसाधनों जैसे समाचार पत्र–पत्रिका, फिल्म, रेडियो, दूरदर्शन, विडियो, मोबाइल फोन, ई–मीडिया एवं सोशल मीडिया ने हमारे ज्ञान को और अधिक विस्तारित किया है। जहां एक और भारतीय ग्रामीण समाज आज से कुछ अवधि पूर्व विभिन्न प्रकार की विषमताओं से जैसे निरक्षता, गरीबी, धर्मजाति भेदभाव , अंधविश्वास और रूढ़ियों से बहुत अधिक घिरा हुआ था। वहीं जनमाध्यम के प्रयोग, विकास एवं विस्तार से जनमाध्यम संस्थानों ने विशेष रूप से भारतीय सिनेमा, रेडियो तथा दूरदर्शन ने सामाजिक जनजागरूक विषय मूलक मनोरंजन कार्यक्रमों की प्रस्तुति के माध्यम से ग्रामीण जनता को शिक्षित एवं जागरूक तो किया ही है, साथ ही कई रूढ़ियों अंधविश्वासों जादूटोनों को काफी हद तक खत्म किया हैं वहीं बालक शिक्षा के साथ–साथ बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक किया हैं।

गाँवों में सहकारिताओं पंचायती राज की स्थापना से किसानी के राजनैतिक दायित्वों में एक नया परिवर्तन आता जा रहा है। आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी के प्रवेश से कृषि एक लाभकारी उद्योग के रूप में उभरने लगी है। बड़े–बड़े उद्योगपति भी कृषि की और आकर्षित होने लगे हैं। वे बीज उद्योग और कृषि यत्रं निर्माण के संसाधनों के माध्यम से कृषि में प्रवेश कर रहे हैं। आज लगभग 40 शाखओं, उपशाखाओं में अध्ययन अनुसंधान और प्रसार होने से कृषि विज्ञान का क्षेत्र पृथ्वी, समुद्र और अंतरिद्वा तक व्यापक होता जा रहा है। बिना भूमि के खेती की नई प्रौद्योगिकी ने कुछ नए आश्चर्यों को जन्म दिया है। विकासमूलक उपयोग की दिशा में यह पहला कदम रहा। यह प्रयोग लोगों को सूचित करने और उन्हें विभिन्न विषयगत सूचना उपलब्ध कराने को लेकर था। साथ ही इसका यह उद्देश भी है, कि इससे समाज के लोगों को जहां एक ओर नया दृष्टिकोण मिल सकेगा वहीं यह भी आकलन हो सकेगा कि व्यक्तियों व समाज के मध्य वे कौन से तत्व या दृष्टिकोण हैं जो लोगों को न केवल प्रभावित करते है बल्कि उनके सामूहिक, व्यवहरिक व कार्यों पर भी असर डालते है।

इसी जागरूकता के बलबूते कई ग्रामीण अचंल के बालक बालिका शहरों में रहकर शिक्षा प्राप्त कर सरकारी गैर सरकारी यहां तक की अतंर्राष्ट्रीय संस्थानों में उच्च पद को भी प्राप्त कर रहे हैं। वहीं तेजी से एक और तथ्य देखने को मिल रहा है कि छोटे शहरों, अति छोटे शहरों तथा ग्रामिण अंचलो से छोटे बच्चें तथा नव युवा छोटे परर्दे पर प्रसारित होने वाले मनोरंजन चैनल्स तथा रियलिटी शो में अपना हुनर दिखाते हुए प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे है। जिससे लोक संस्कृति को भी एक बड़ा मंच मिल रहा है तथा लोगो को इसे नजदीक से जानने का मौका मिल रहा है जिससे वर्तमान में ग्रामीण समाज में शिक्षा में उच्चस्तर पर बदलाव आया हैं।

जिसके परिणामस्वरूप जनसंचार के अन्य माध्यमों जैसे पत्र पत्रिका का भी विस्तार होने लगा है। जिससे ग्रामीण परिवेश में सरकारी नीतियों के प्रति जागरूकता, चुनाव, उपभोकता वस्तु, व्यापार, संसाधन, जीवन व्यापन के तौर तरिके, जीवन व्यापन की आवश्यकता के प्रति एकजुटता, सही गलत के निर्णय की क्षमता में समाजिक विकासात्मक उच्चस्तरिय बदलाव देखे जा सकते है। जनसंचार साधनों द्वारा प्रचारित नयी सूचनायों से भारतीय ग्रामीण समाज के मानसिक क्षितिज का विस्तार हुआ है। नई आशाऐं, आकांक्षाएं उत्पन्न हुई हैं। नई अीभरूचियों समस्यों के सामाधान के नये बोध प्रकट हुए है। सामाजिक, आर्थिक विकास का मुख्य अभियंता जनसंचार ही है। वर्तमान में भारतीय शहरी आधूनिक जनमाध्यमों जैसे कंम्प्युटर, डिश टीवी, मोबाइल, इंटरनेट जनमाध्यम ग्रामीण अचंलों मे भी उसी तरह उपभोग किया जा रहा है जिस आधार पर इन्हें शहरों में उपभोग किया जा रहा है। इन्ही जनमाध्यम उपभोग के परिणाम स्वरूप ही उच्चस्तर एवं विकास के प्रति ग्रामीण परिवेश में क्रांतिकारी बदलाव नजर आ रहे हैं।

आज इक्कीसवीं सदी में यह दुनियां के अधतन संचार तकनीकों से भरपूर है। संचार की इस क्रांति के परिणाम स्वरूप भारतीय शहरी परिवेश में जहां तेजी से बदलाव आने आरंभ हुए है वहीं यह बदलाव ग्रामीण परिवेश में भी उसी रफतार से कदम दर कदम बढ़ते चले जा रहे है। इस संचार क्रांति से ग्रामीण परिवेश में लोगों के सोचने समझने जानने मनोरंजन के संसाधनों में तो बदलाव आया ही है वहीं लोगों की इच्छा शक्ति, जिज्ञासा, आधुनिकरण के प्रति मोह आधुनिक संसाधनों का उपयोग, शिक्षा, जागरूकता में क्रांतिकारी बदलाव के साथ तेजी से विकास हुआ है। आधुनिक काल में परिवर्तन को नवीन, शक्तियों, विशेषकर नगरीकरण, औद्योगीकरण, कृषि यंत्रीकरण एवं कृषि संबंधी नवीन ज्ञान, शिक्षा का प्रसार इत्यादि ने ग्रामीण जन–जीवन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित किया है, जिससे उसकी सामाजिक–आर्थिक संरचना में गतिशीलता पैदा हुई है। भूमि पर आधारित अर्थव्यवस्था मुद्रा पर आधारित अर्थव्यवस्था में बदलती हुई दिखाई दे रही है।

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय ग्रामीण समुदायों में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। एक तरफ विकास आयोजकों के द्वारा ग्रामीणों को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा शैक्षिक जीवन में आयोजित परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा रहा है तो दूसरी और संचार, सम्पर्क प्रौद्योगिकी एवं शिक्षा के विकास के चलते ही परिवर्तन हो रहे हैं। नियोजित एवं अनियोजित परिवर्तनों के इस प्रवाह में सामंजस्य तथा असंतुलन, संगठन और विघटन की प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर हो रही है।

यहीं बदलाव या विकास ग्रामीण जनता को शहरों के प्रति आकर्षित कर रहा है। यह आकर्षण यहीं खत्म नहीं हुआ संचार के क्षेत्र में बढ़ रही नित्य नयी नयी तकनिकों के प्रति ग्रामीण जनता को और आकर्षित कर रहा है। इसी के परिणाम स्वरूप भारतीय ग्रामीण परिवेश को तेजी से इंटरनेट से जोड़ा जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कृषि एवं ग्रामीण पत्रकारिता – डॉ. नरेश गौतम (2010) ISBN 978.81.7445.541.3
2. जनसंचार एवं समाज – डॉ.मोनिका नागोरी (2005) ISBN 81.86064.47.8
3. आधुनिक पत्रकारिता के विविध आयाम – नीरज वर्मा (2010) ISBN 978.81.7445.549.9